Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

# सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

**देव अमर सिंह**
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, का.सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या
**डॉ. अनुराग मिश्र**
एसो. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, का.सु.साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या, (उत्तर प्रदेश)

**Article Info**
Volume 4, Issue 3
Page Number : 84-90

**Publication Issue :**
May-June-2021

**Article History**
Accepted : 01 June 2021
Published : 15 June 2021

**शोध–सारांश –** आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक कवयित्री के तौर पर सुभद्रा कुमारी चौहान का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कविताएँ अंग्रेजी साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद के विरोध में भारतीय आकांक्षाओं को बेहद तीव्रता व गहनता से मूर्त रूप प्रदान करती हैं। 'झाँसी की रानी' व अन्य राष्ट्रवादी कविताओं की व्यापक प्रसिद्धि के कारण उनकी पहचान मुख्यतः कवयित्री की ही रही है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने कहानियाँ भी लिखी हैं, जो उतनी ही महत्वपूर्ण हैं जितना उनका काव्य–लेखन। वास्तव में, उनकी कहानियाँ काव्य–संवेदना के पूरक और अनेक संदर्भों में विस्तार के आयामों को प्रस्तुत करती हैं। स्वतन्त्रता–आन्दोलन के समय की भारतीय स्त्रियों की पहचान, उनकी सक्रियता और उनकी संभावनाओं का वृहद परिदृश्य सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों से ही बनता दिखाई देता है। वह नारी–मुक्ति की आकांक्षा को स्वाधीनता–मुक्ति के बृहत परिप्रेक्ष्य में ही रखकर देखती हैं और सामाजिक ढांचे के यथास्थितिवादी चिह्नों की सटीक पहचान प्रस्तुत करती हैं। भारतीय मूल्यों की प्रतिस्थापना, सामाजिक सार्थकता और सामयिक जीवन–स्थितियों का निवेश उनकी कहानियों को ऐतिहासिक महत्व तो प्रदान करता ही है, उसे उत्तरवर्ती भारतीय जीवन के लिए भी प्रासंगिक बनता हैं।

**बीज शब्द –** स्वतंत्रता– आन्दोलन, औपनिवेशिक चेतना, महादेवी वर्मा, बच्चन सिंह, डॉ. नगेन्द्र, असहयोग आन्दोलन, स्त्री–चेतना।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में राष्ट्रीय चिंगारी धधक रही है। सुभद्रा का साहित्य उस समय का है जब हमारा देश परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। स्वतंत्रता के लिए वीरों के पैर डगमगा रहे थे। उस समय सुभद्रा जी समस्त जनता में अपनी कविताओं के माध्यम से प्राण फूँक रही थीं। राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत इनकी कुछ कविताएँ इस प्रकार हैं– ''झाँसी की रानी', 'झाँसी की रानी की समाधि', 'जलियावाला बाग में बसंत', 'मेरी कविता', 'खिलौने वाला', 'राखी की चुनौती', 'राखी', 'विजय दशमी', 'मातृ मंदिर', 'सेनानी का स्वागत', 'मेरी टेक', 'विदा', 'स्वदेश के प्रति', 'पुरस्कार कैसा', 'वीरों का कैसा हो बंसत', 'लोहे को पानी कर देना' आदि।

**Copyright: ©** the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

भारत की स्वतंत्रता के लिए पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं ने भी बढ़–चढ़कर भाग लिया था। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिये थे। बुन्देलखण्डी लोक शैली में लिखी गयी 'झाँसी की रानी' कविता का अंश इस प्रकार हैः–

''इनकी गाथा छोड़ चले हम 'झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वन्द्व असमानों में,
जख्मी होकर वॉकर भागा
उसे अज़ब हैरानी थी।
बुन्देले हर बोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
'झाँसी वाली रानी थी।।''[1]

इस कविता में कवयित्री ने लक्ष्मीबाई के बचपन, यौवन, विवाह, विधवा, अंग्रेजों से विद्रोह, युद्ध और अन्त में शहीद होकर वीरगति प्राप्ति की घटना का बड़ा सटीक और सुन्दर ओजपूर्ण वर्णन किया है। झाँसी की रानी के विषय में डॉ. सुमन राजे ने इस प्रकार लिखा है– ''प्रसिद्ध 1857 की क्रान्ति में 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अहम् भूमिका निबाही। इतिहास में सम्भवतः पहली बार उन्होंने 'स्त्री सेना' का गठन किया और अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिये। अपनी शहादत से इन्होंने स्वतन्त्रता की नींव रखी।''[2]

श्रीमती सुभद्रा जी ने लक्ष्मीबाई की मृत्यु पर 'झाँसी की रानी की समाधि पर' शीर्षक से कविता लिखा। इस कविता से रानी की गौरव गाथा का स्मरण होता है। इस कविता की महत्वपूर्ण पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

''इस समाधि में छिपी है, एक राख की ढेरी।
जल कर जिसने स्वतन्त्रता की, दिव्य आरती फेरी।।
यह समाधि, यह लघु समाधि, है झाँसी की रानी की।
अन्तिम लीला स्थली यही है, लक्ष्मी मर्दानी की।।

.....

पर कवियों की अमर गिरा में, इनकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाते हैं, वीरों की बानी।।
बुन्देले हर बोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मर्दानी वह थी, झाँसी वाली रानी।।

रौलट एक्ट के विरोध में अनेक स्थानों पर जनसभाएँ आयोजित की गयी थीं। इस समय अंग्रेजी सरकार ने पंजाब के लोकप्रिय नेता डॉ. सैफुदीन किचलू और डॉ. सत्यपाल को गिरफ्तार कर हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में नजर बन्द कर दिया। इनकी गिरफ्तारी के विरोध में 13 अप्रैल सन् 1919 ई. को अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक जनसभा हो रही थी। यह बाग तीन ओर से ऊँची–ऊँची दीवारों से घिरी हुई थी और जिस ओर मुँह खुला हुआ था उसी ओर से जनरल डायर ने गोली चलवा दिया, जिसमें सैंकड़ों की

संख्या में महिला, पुरुष और बच्चे मारे गये। इस घटना से क्षुब्ध होकर ''शंकरन नायर ने वायसराय की कार्यकारणी परिषद से इस्तीफा दे दिया, महात्मा गांधी ने 'कैसर–ए–हिन्द' की उपाधि, जमनालाल बजाज ने 'राय बहादुर' की उपाधि और रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 'सर' की उपाधि वापस कर दिया।''[4] इस नरसंहार के बाद सुभद्रा कुमारी चौहान की लिखी गयी कविता 'जलियावाला बाग में बसंत' भारतीयों के हृदय–पटल को झकझोर देती हैं, जिसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

''परिमल–हीन पराग दाग–सा बना पड़ा है।
हा! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।।
आओ प्रिय ऋतुराज ! किन्तु धीरे से आना।
यह है शोक–स्थान यहाँ मत शोर मचाना।।

.....

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा–खाकर।
कलियां उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।।

.....

तड़प–तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर।
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर।
यह सब करना, किन्तु बहुत धीरे से आना।
यह है शोक–स्थान यहाँ मत शोर मचाना।।''[5]

सुभद्रा जी की दूसरी कविता जलियावाला बाग, एक नववधू की मनोदशा का वर्णन करती है। यह नवविवाहिता स्त्री है जिसका पैर महावर से अभी लाल है और साथ ही लाल रंग की साड़ी पहने है। इस नवेली स्त्री का पति इसी बाग में शहीद हो गया था। यह जो साड़ी पहने है उसका लाल रंग खून के धब्बे से रंगा प्रतीत हो रहा है एवं आँचल आँसुओं से गीला हो गया है। सुभद्रा की 'मेरी कविता' का मार्मिक अंश इस प्रकार है–

''उसका छोर लाल! सम्भव है, हो वह खूनी रंग से लाल।
है सिन्दूर–बिन्दु से सज्जित, अब भी कुछ–कुछ उसका भाल।
अब भी है उसके पैरों में, बनी महावर की लाली।
हाथों में मेंहदी की लाली, वह दुखिया भोली–भाली।।''[6]

सुभद्रा कुमारी की कविताओं में राष्ट्रीयता के साथ–साथ पारिवारिक प्रेम है। राष्ट्र–प्रेम का सुन्दर समन्वय इनकी कविताओं में दिखाई देता है। सुभद्रा जी के विषय में डॉ. सुमन राजे ने लिखा है– ''सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएं कई अर्थों में विशिष्ट हैं..... स्त्री के सभी रूप बालिका, प्रेमिका, पत्नी, बहिन और मां उनके जीवन में भी और कविता में भी पूरे वैभव के साथ उतरे हैं। सभी में सूत्रबद्धता राष्ट्रीय भावना की है। जीवन और कविता की ऐसी पारस्परिकता बहुत कम देखी जाती है।''[7]

सुभद्रा कुमार चौहान की कविताओं में उथल–पुथल नहीं है। इनकी पारिवारिक कविताओं में भी देश–प्रेम का जोशपूर्ण वर्णन है। साधारण से साधारण कविताओं में राष्ट्रीयता की मनोरम छटा दिखाई पड़ी है। सुभद्रा जी बच्चों के बचपन में ही राष्ट्रीयता का बीज बो देती हैं। इन्होंनें 'खिलौनेवाला' कविता में पौराणिक प्रसंग के साथ–साथ राष्ट्रीय चेतना का वर्णन इस प्रकार किया है–

''वह देखों माँ आज खिलौने वाला, फिर से आया है।
कई तरह के सुन्दर–सुन्दर, नये खिलौने लाया है।।
छोटे–छोटे धनुष बाण हैं, छोटी–छोटी तलवार।
नये खिलौने ले लो भैया, जोर जोर वह रहा पुकार।।

.....

तुम सोचोगी मैं ले लूंगा, तोता,बिल्ली, मोटर,रेल।
पर माँ, यह मैं कभी न लूंगा, ये तो हैं, बच्चों के खेल।।
मैं तलवार खरीदूंगा माँ, या मै लूंगा, तीर कमान।
जंगल में जा किसी ताड़का को मारूंगा राम समान।।''[8]

कवयित्री की कविताओं का पाठ करने से देश की ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। भारतीयों की एकजुटता के सम्मुख अंग्रेजों की तोपें काम नहीं कर पायीं। सुभद्रा जी उस दौर की थी जब क्रान्तिकारियों ने अपनी कुर्बानी हँसते–हँसते दिया था। इन वीरों का बलिदान सुभद्रा के साहित्य में बहुतायत दृष्टिगोचर होता है। श्रीमती सुभद्रा जी के विषय में डॉ. बच्चन सिंह जी ने इस प्रकार लिखा ''राष्ट्रीय संग्राम में कई कवियों ने सक्रिय योग दिया था। उनकी कविताओं में जोश है, प्रलयाग्नि है, दीवानगी है, अराजकता है, पर सुभद्रा जी राष्ट्रीय संग्राम में कूदकर भी परिवार से बंधी रहीं। इसीलिए उनमें गहन माननीय प्रेम है, संयम है, व्यवस्था है।''[9]

सुभद्रा ने देश की सोयी हुई जनता को जगाने के लिए अपनी कविताओं में भारतीय त्यौहारों का बड़े सुन्दर ढंग से वर्णन किया है। यह पर्व भारतीय जनमानस की श्रद्धा का केन्द्र है जो साल भर में क्रमशः आते रहते हैं। कवयित्री की रक्षाबन्धन पर्व पर लिखी गयी कविता 'राखी की चुनौती' का भाग द्रष्टव्य है–

''मैं हूँ बहिन किन्तु भाई नहीं है।
है राखी सजी पर कलाई नहीं है।।
है भादो, घटा किन्तु छाई नहीं है।
नहीं है खुशी पर रूलाई नहीं है।।

.....

मेरा बन्धु माँ की पुकारों को सुनकर,
के तैयार हो जेलखाने गया है।
छीनी हुई माँ की स्वाधीनता को
वह जालिम के घर से लाने गया है।।''[10]

सुभद्रा जी की रक्षाबन्धन विषय पर लिखी गयी दूसरी कविता में भाई–बहन के प्रेम का चित्रण है। प्रत्येक भाई अपनी बहन से राखी का सूत कलाई पर बंधवाता है और बहन की रक्षा का प्रण लेता है। सुभद्रा कुमारी भारतमाता को आजाद कराने वाले उन भाईयों को राखी बाँधना चाहती हैं। कवयित्री द्वारा लिखी गई ''राखी'' कविता इस प्रकार है–

''बोलो, सोच–समझकर बोलो, क्या राखी बँधवाओगे?
भीर पड़ेगी, क्या तुम रक्षा करने दौड़े आओगे?
यदि हाँ, तो यह लो मेरी, इस राखी को स्वीकार करो।

आकर, भैया, बहन सुभद्रा के कष्टों के भार हरो।।''[11]

धीरे–धीरे समय परिवर्तन होता रहता है एक के बाद दूसरा त्यौहार आता रहता है। श्रीमती सुभद्रा जी ने अपनी एक कविता मे 'विजयादशमी' का उल्लेख किया है। इस पर्व के माध्यम से कवयित्री ने असत्य पर सत्य की विजय का संघोष किया है। इस कविता के माध्यम से सुभद्रा ने भारतवर्ष की सोयी हुई जनता को जगाना चाहा है। इस कविता की कुछ पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत हैं–

''सबल पुरुष यदि भीरु बने, तो हमको दो वरदान सखी!
अबलाएँ उठ पड़े देश में, करे युद्व घमासान सखी!
पन्द्रह कोटि असहयोगिनियाँ दहला दे ब्रहााण्ड सखी!
भारत लक्ष्मी लौटाने को रच दे लंकाकाण्ड सखी।
खाना, पीना, सोना, जीना,हो पापी का भार सखी!
मार–मार कर पापों का कर दें, हम जगती से छार सखी।''[12]

सुभद्रा कुमारी चौहान देश की परिस्थितियों से पूर्ण रूप से परिचित थीं। महात्मा गाँधी जी के कहने से उन्होंने असहयोग आन्दोलन, झण्डा आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी और अनेक बार जेल यात्रा किया। सुभद्रा पहली सत्याग्रही महिला थीं जो झण्डा आन्दोलन में जेल गयी थीं। इस घटना पर राजगोपालाचारी ने सुभद्रा की प्रशंसा करते हुए आम जनता को इनसे सीखने के लिए प्रेरित किया था।

सुभद्रा कुमारी की कहानियाँ मन को झकझोर देती हैं। अधिकतर कहानियाँ सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण है। सुभद्रा ने कहानियों का लेखन अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए किया था। कुछ कहानियों में राष्ट्रीय चेतना की चिंगारी है। जो इस प्रकार हैं– 'पापी पेट, 'अमराई', 'चढ़ा दिमाग', 'ताँगे वाला', 'हींग वाला', 'गुलाब सिंह', 'राही' आदि। लेखिका ने लगभग पन्द्रह कहानियाँ जेल–यात्रा के समय लिखी थीं।

सुभद्रा की 'पापी पेट' कहानी राष्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत है जिसका पाठन करने पर भारतीयों की नाड़ियों में गर्म रक्त का संचार होने लगता है। अंग्रेजों के शासन में अधिकतर कर्मचारी से अधिकारी तक सभी भारतीय थे। उनके मन में भी भारत माता के प्रति अपार श्रद्धा थी। लेकिन अंग्रेजों के नौकर होने के कारण आदेशों का पालन करते थे। इस कहानी में भी सिपाही राम खेलावन, कोतवाल बखतावर सिंह और न्यायाधीश राय साहब कुन्दन लाल आदि के मन में राष्ट्र–प्रेम की भावना है। इसी कारण राय साहब मुल्जिम से माफी माँगते हैं– ''क्षमा करना, भाई इस पापी पेट के कारण लाचार हैं वरना क्या हमारे दिल में देश–प्रेम नही है?।'[13]

सुभद्रा कुमारी चौहान ने देश की स्वतंत्रता के लिए अथक परिश्रम किया जिसके परिणामस्वरूप हमारा देश गुलामी की जंजीरों से मुक्त हुआ। सुभद्रा जी की प्रिय सहेली महादेवी वर्मा जी ने उनकी घर–गृहस्थी के विषय में इस प्रकार लिखा हैं– ''अपने निश्चित लक्ष्य पर अडिग रहना और सब कुछ हंसते–हंसते सहना उनका स्वभावजात गुण था ..... वस्तुतः जिस विवाह में मंगल–कंकण ही रण–कंकण बन गया, उनकी गृहस्थी भी कारागार में ही बसाई जा सकती थी और उन्होंने बसाई भी वहीं।''[14]

राष्ट्रीय चेतना को धार देने वाली लेखिका की एक कहानी 'अमराई' है। इस कहानी में ठाकुर साहब की बाग में झूला पड़ा हैं, जहाँ अधिकतर बच्चे और महिलाएँ हैं। बहनें अपने–अपने भाई की कलाई पर राखी बाँध रही हैं। ठाकुर साहब के घर के बच्चे और महिलाएँ हैं। किसी अंग्रेज सिपाही को लगा कि–यह

क्रान्तिकारियों का अड्ड़ा है उसने कहा कि–दस मिनट के अन्दर बाग खाली कर दो, नहीं तो लाठी चल जायेगी। उसने ऐसा ही किया। जिसमें ठाकुर का पोता भयंकर रूप से घायल हो गया। जिसके विरोध में ठाकुर साहब ने राय साहिबी और आनरेरी मजिस्ट्रेटी से त्यागपत्र दे दिया।

सुभद्रा जी की 'चढ़ दिमाग' कहानी राष्ट्र के प्रति समर्पित है। इस कहानी में शीला लेखिका और केन्द्रीय पात्र है। इसके पति स्वतन्त्रता संग्राम के समय जेल चले गये थे और दो सौ रूपये जुर्माना लगा था। इस दण्ड के लिए तत्कालीन सरकार ने घर की वस्तुओं को नीलाम कर दिया।

'ताँगे वाला' कहानी में ताँगा हाँकने वाला रामदास खद्दरधारी है। उसने अपने ताँगे पर किसी अंग्रेज को न बैठाने का शपथ ग्रहण किया है। ताँगे पर बैठने वाला व्यक्ति रामदास के विचारों से प्रभावित होकर उसके विषय में पूछता है, तब रामदास ने इस प्रकार उत्तर दिया– ''महात्मा गॉधी के सत्याग्रह आन्दोलन में भी बहुत दिनों तक शरीक रहा हूँ। दो बार जेल भी हो आया हूँ हुजूर, पर तबियत नहीं मानती। मेरे अन्दर से तो जैसे काई पुकार उठता है 'गदर'! सन् सत्तावन का सीन फिर एक बार दुहराया जाये। इन फिरंगियों से कसकर बदला लिया जाय, तभी हमारा और हमारे देश का उद्धार होगा।''[15]

सुभद्रा कुमारी चौहान की 'हींगवाला' कहानी हिन्दू–मुस्लिम दंगे पर आधारित है। होली के समय में भारी दंगा हुआ था जिसमें सरकार ने धारा–144 लागू कर दिया था। दशहरे के दिन दंगा हुआ था जिसमें बड़ी संख्या में हिन्दू–मुस्लिम मौत के घाट उतार दिये गये। इसमें हींगवाला विक्रेता भी खान मुस्लिम था। उसकी सद्भावना के कारण सावित्री के बच्चे सलामत घर पहुँच सके।

'राही' कहानी में लेखिका ने यह दिखाया है जो वास्तव में गरीब, किसान, मजदूर, नंगे भूखे, अशिक्षित हैं, उनके पास न तो तन का कपड़ा है और न ही भरपेट खाना। अधिकतर खद्दरधारी अपने आपको सच्चा देश–प्रेमी, समाज–सुधारक मानते हैं वह केवल प्रोन्नति के लिए 'ए' और 'बी' क्लास की जेल–यात्रा को सुखमय मानते हैं। इस प्रकार सुभद्रा ने झूठ का पर्दाफाश इस कहानी में किया है।

श्रीमती सुभद्रा जी 'गुलाब सिंह' कहानी में बालक गुलाब सिंह के साहस और बलिदान का वर्णन करती हैं। इसकी बहन ने अपने भैया के मस्तक पर रोली का तिलक लगाकर हाथ में पान का बीड़ा और अपनी ओढ़नी का झण्डा देकर हंसते–हंसते विदा कर दिया। बादशाह के कहने पर गोलियाँ चल गयीं और गुलाब सिंह शहीद हो गया। इस कहानी में सुभद्रा कुमारी चौहान ने लिखा है– ''यह फ्रांस की राज्य–क्रान्ति हो सकती है। यह रूस की राज्य–क्रान्ति हो सकती है। यह हिन्दुस्तान की सन् 42 की क्रान्ति भी हो सकती है। क्योंकि यह घटना चिरंतन है, अनन्त है। यह जैसे पेरिस में, मास्को में, वैसे जबलपुर में हो सकती है।''[16]

इस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान का समग्र साहित्य भारत माता के हृदय का हार है, जिसमें नाना प्रकार के पुष्पों की भाँति कविताएँ गुथी हुई हैं। उस मनमोहक हार की सुगन्ध आज भी ज्यों की त्यों विद्यमान है। जहाँ कविताओं में सिंह की दहाड़ है वहाँ कहानियों में समाज का यथार्थ रूप है। इनके विषय में डॉ. बच्चन सिंह जी ने इस प्रकार लिखा है– ''माखनलाल चतुर्वेदी और नवीन की भाँति राष्ट्रीय आन्दोलन से सक्रिय रूप से जुड़ी रही हैं। इस सिलसिले में उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा।''[17]

राष्ट्रीय काव्यधारा के अन्दर और बाहर उथल–पुथल चल रही थी, अन्दर कुछ और था तो बाहर कुछ और। जहाँ कवियों ने भारत की आंतरिक विसंगतियों को दूर करने के लिए जनमानस को एकत्र होने का आह्वान किया वहाँ दूसरी ओर अंग्रेजों को भारत से खदेड़ने के लिए स्वाधीनता संग्राम की ओर प्रेरित

किया। श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य के विषय में डॉ. नगेन्द्र ने इस प्रकार लिखा है– ''भाव की दृष्टि से कविताओं को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में राष्ट्र–प्रेम की कविताएँ रखी जा सकती है जिसमें इन्होंने आजादी की लड़ाई में भाग लेने वाले वीरों को विषय बनाया है ..... दूसरे वर्ग के अन्तर्गत वे कविताएँ रखी जा सकती हैं, जिनकी प्रेरणा इन्हें अपने परिवारिक जीवन से प्राप्त हुई है।''[18]

हिन्दी साहित्य में सुभद्रा कुमारी चौहान का विशेष योगदान है। इनके साहित्य में वीर, श्रृंगार और वात्सल्य रस की त्रिवेणी है। सुभद्रा जी की कविताओं को पढ़ने पर स्वतन्त्रता–आन्दोलन और भारत माता के अमर सपूतों की कुर्बानियाँ जीवित हो जाती हैं।

## सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची :


1. मुकुल : सुभद्रा कुमारी चौहान, ओझा बन्धु आश्रम, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या–82।
2. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास : डॉ. सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–227।
3. सुभद्रा समग्र : सुधा चौहान, द्वितीय संस्करण, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या– 146,147।
4. सामान्य ज्ञान : सुनील कुमार सिंह, लूसेंट पब्लिकेशन, पटना (बिहार), पृष्ठ संख्या–48।
5. सुभद्रा समग्र : सुधा चौहान, द्वितीय संस्करण, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या– 70,71।
6. वही, पृष्ठ संख्या– 74।
7. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास : डॉ. सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 252।
8. सुभद्रा समग्र : सुधा चौहान, द्वितीय संस्करण, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या– 182,183।
9. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ. बच्चन सिंह, दसवां संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या–404।
10. सुभद्रा समग्र : सुधा चौहान, द्वितीय संस्करण, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या– 66।
11. वही, पृष्ठ संख्या– 78।
12. वही, पृष्ठ संख्या– 81,82।
13. बिखरे मोती : सुभद्रा कुमारी चौहान, द्वितीय वृत्ति, उद्योग मन्दिर प्रकाशन, जबलपुर, पृष्ठ संख्या– 35।
14. पथ के साथी : महादेवी वर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद,पृष्ठ संख्या–35।
15. सुभद्रा समग्र : सुधा चौहान, द्वितीय संस्करण, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या– 199।
16. वही, पृष्ठ संख्या– 225।
17. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. बच्चन सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या–238।
18. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं. डॉ. नगेन्द्र, द्वितीय संस्करण, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, पृष्ठ संख्या–519।